



आर्य एवं मुस्लिम महिला रत्न

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
डॉ. शालिनी मिश्रा

मूल लेखक

ज़हूर बख़्श

दो शब्द

इतिहास के विस्तृत पटल पर दृष्टि डालने पर यह तथ्य सहज ही सामने आता है कि समाज और सभ्यता के निर्माण में स्त्री की भूमिका सदैव अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। उसने केवल परिवार और समाज के निर्माण में ही अपना योगदान नहीं दिया, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर शासन, राजनीति, युद्ध, शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्रों में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की। अनेक स्त्रियों ने ऐसी परिस्थितियों में अपने साहस, विवेक, त्याग और आत्मसम्मान का परिचय दिया, जबकि उनके सामने चुनौतियाँ असाधारण थीं। फिर भी इतिहास के अनेक पृष्ठों पर उनके योगदान को वह स्थान नहीं मिल सका, जिसकी वे अधिकारी थीं। 'ज़हूर बख्श कृत आर्य एवं मुस्लिम महिला रत्न' ऐसी ही ऐतिहासिक विस्मृति को दूर करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

यह पुस्तक भारतीय इतिहास की उन महिलाओं को केंद्र में रखा है, जिन्होंने अपने समय की परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए समाज और राष्ट्र के जीवन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। पुस्तक का महत्त्व इस बात में है कि इसमें महिलाओं को केवल पारिवारिक अथवा सामाजिक भूमिका तक सीमित करके नहीं देखा गया है, बल्कि उनके व्यक्तित्व के उन पक्षों को सामने लाया गया है, जिनसे उनकी नेतृत्व-क्षमता, निर्णय-शक्ति, साहस, त्याग, विद्वत्ता और आत्मसम्मान का परिचय मिलता है। इस दृष्टि से यह पुस्तक स्त्री के ऐतिहासिक अवदान को समझने के लिए प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत पुस्तक में आर्य और मुस्लिम दोनों परंपराओं से संबंधित महिला-चरित्रों को समान महत्त्व के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक भारतीय इतिहास को किसी एक समुदाय की दृष्टि से देखने के बजाय उसकी विविधतापूर्ण संरचना को सामने लाती है। विभिन्न सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों से आई इन महिलाओं के जीवन को एक साथ पढ़ने पर यह अनुभव किया जा सकता है कि भारतीय संस्कृति का निर्माण अनेक परंपराओं और समुदायों के सम्मिलित योगदान से हुआ है।

'आर्य महिला रत्न' (खंड-क) में मीनल देवी, वीरमती, विद्युल्लता, जीजाबाई, रानी सारन्धा, महारानी प्रभावती, हाड़ारानी, रानी जयमती, ताईबाई, रानी साहब कुँवरि, कृष्णकुमारी, महारानी ज़िन्दा और महारानी लक्ष्मीबाई जैसे महिला-चरित्रों को स्थान दिया गया है। इसी प्रकार 'मुस्लिम महिला रत्न' (खंड-ख) में सुलताना रज़िया बेगम, बीदर की बेगम, गुलशन, रूपवती बेगम, मलका चाँद बीबी, नूरजहाँ, जहानआरा, रौशनआरा, नज़ीरुन्निसा,

फूलजानी बेगम, ज़ेबुन्निसा बेगम और लुत्फुन्निसा बेगम के जीवन-प्रसंग प्रस्तुत किया गया है।

यहाँ प्रसिद्ध ऐतिहासिक महिलाओं के साथ ऐसी महिलाओं को भी स्थान मिला है, जिनकी चर्चा सामान्य इतिहास-बोध में अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। इतिहास को केवल कुछ प्रसिद्ध व्यक्तित्वों और घटनाओं के माध्यम से समझना पर्याप्त नहीं हो सकता। इतिहास की वास्तविक व्यापकता तब सामने आती है, जब उसमें उन व्यक्तियों की भूमिका को भी देखा जाए, जिनके योगदान ने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया, किंतु जिन्हें पर्याप्त रूप से याद नहीं रखा गया।

इस पुस्तक की उपलब्धि स्त्री को इतिहास की सक्रिय शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना है। यहाँ स्त्री केवल किसी पुरुष की पत्नी, पुत्री, माता या बहन के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि उसका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व है। वह स्वयं निर्णय लेती है, संघर्ष करती है, परिस्थितियों का सामना करती है और आवश्यकता पड़ने पर अपने समय की दिशा को प्रभावित करती है। यही दृष्टि पुस्तक को स्त्री-जीवन के सामान्य परिचय को आगे ले जाती है।

रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, रज़िया सुल्तान, नूरजहाँ और चाँद बीबी जैसे चरित्र भारतीय इतिहास में पहले से ही अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। किंतु उनके साथ अन्य अपेक्षाकृत कम चर्चित महिलाओं को एक ही पुस्तक में स्थान देना इसकी उपयोगिता को बढ़ाता है। इनके जीवन में हमें स्त्री के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं—कहीं मातृत्व और संस्कार हैं, कहीं राजनीतिक की दूर दृष्टि, कहीं शासन-कौशल, कहीं युद्ध का साहस और कहीं कठिन परिस्थितियों के सामने अडिग रहने का आत्मबल।

पाठकों के लिए यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। इसमें प्रस्तुत प्रत्येक महिला-चरित्र स्वतंत्र अध्ययन की संभावना रखता है। इनके माध्यम से स्त्री-अध्ययन, इतिहास, समाज, संस्कृति, राजनीति, शिक्षा, सत्ता-संरचना और भारतीय सामाजिक जीवन से जुड़े अनेक शोध-विषयों पर विचार किया जा सकता है। विशेष रूप से उन महिला-चरित्रों का पुनर्पाठ एवं अध्ययन शोध की नई दिशाएँ खोल सकता है, जिनकी ऐतिहासिक उपस्थिति तो महत्वपूर्ण रही है, लेकिन जिन पर पर्याप्त अध्ययन नहीं हुआ।

आज जब स्त्री-अस्मिता, समानता, शिक्षा, अधिकार, नेतृत्व और सामाजिक भागीदारी जैसे प्रश्न व्यापक विमर्श का हिस्सा है, तब ऐसी पुस्तकों की उपयोगिता और बढ़ जाती है। इतिहास की इन महिलाओं के जीवन को वर्तमान संदर्भ में पढ़ने से यह समझ विकसित होती है कि स्त्री-सशक्तिकरण की आकांक्षा आधुनिक समय तक सीमित नहीं रही है। विभिन्न कालखंडों में महिलाओं ने अपनी परिस्थितियों के भीतर रहते हुए अपनी क्षमता, साहस और स्वतंत्र अस्तित्व का परिचय दिया है।

किसी समाज का इतिहास उसकी महिलाओं के योगदान के बिना अधूरा है। यदि

इतिहास से स्त्रियों की भूमिका को हटा दिया जाए तो सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक विकास और राजनीतिक घटनाओं की अनेक कड़ियाँ अस्पष्ट हो जाएँगी। इसलिए इतिहास में स्त्री की उपस्थिति को दर्ज करना केवल अतीत के प्रति न्याय नहीं, बल्कि वर्तमान की ऐतिहासिक समझ को भी अधिक व्यापक बनाना है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'आर्य एवं मुस्लिम महिला रत्न' भारतीय इतिहास में स्त्री के बहुआयामी योगदान को सामने लाने वाली महत्वपूर्ण कृति है। यह पुस्तक साहस, त्याग, आत्मसम्मान, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व से संपन्न अनेक महिला-चरित्रों को पाठकों के सामने रखती है। साथ ही आर्य और मुस्लिम महिलाओं को एक साझा संदर्भ में प्रस्तुत करके भारतीय समाज की बहुलतावादी और समन्वयकारी परंपरा को भी रेखांकित करती है। यह पुस्तक केवल अतीत की महिलाओं का परिचय नहीं कराती, बल्कि हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि इतिहास के निर्माण में स्त्री की भूमिका को गंभीरता से समझा जाना चाहिए।

'आर्य महिला रत्न' का प्रकाशन 1924 में हुआ था। इसी कालखंड के आसपास 'मुस्लिम महिला रत्न' भी प्रकाशित हुई। दोनों कृतियाँ अपने-अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में स्त्रियों के जीवन, उनके योगदान और तत्कालीन समाज में उनकी भूमिका को सामने लाने वाली महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। बाद में 'मुस्लिम महिला रत्न' में संकलित महिला-जीवनियों और कथाओं को 'आज़ादी के दस्तावेज़', खंड-1 में भी स्थान मिला। इससे इन सामग्री के ऐतिहासिक महत्व की पुष्टि होती है और यह संकेत भी मिलता है कि इन जीवन-कथाओं को केवल साहित्यिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि अपने समय के सामाजिक-ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक में 'आर्य महिला रत्न' और 'मुस्लिम महिला रत्न' को एक साथ संकलित किया गया है। इस संकलन का उद्देश्य केवल दो पुस्तकों को एक स्थान पर उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि उनके बीच के संवाद और अंतर्संबंध को सामने लाना है। अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमियों में लिखी गई इन कृतियों को साथ पढ़ने पर तत्कालीन भारतीय समाज में स्त्री के स्थान और उसके बदलते स्वरूप को तुलनात्मक दृष्टि से समझने का अवसर मिलता है। इससे यह भी देखा जा सकता है कि विभिन्न समुदायों की सामाजिक परिस्थितियाँ भले अलग रही हों, लेकिन शिक्षा, आत्मसम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्व, संघर्ष और योगदान जैसे प्रश्नों ने स्त्री-जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया।

इस संयुक्त पाठ का महत्व विशेष रूप से इसलिए बढ़ जाता है कि यह भारतीय समाज को केवल धार्मिक या सामुदायिक विभाजनों के आधार पर देखने के बजाय उसके साझा सामाजिक अनुभवों को पहचानने की संभावना पैदा करता है। दोनों कृतियों में उपस्थित जीवन-कथाएँ अपने-अपने सांस्कृतिक परिवेश की विशिष्टताओं को सामने लाती हैं, लेकिन साथ ही उनमें ऐसे मानवीय और सामाजिक मूल्य भी दिखाई देते हैं जो

इन सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं। इन्हीं समान अनुभवों और अंतर्संबंधों के माध्यम से तत्कालीन भारत की साझी संस्कृति के अनेक पहलुओं को समझा जा सकता है।

यहाँ 'साझी संस्कृति' का आशय केवल विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व से नहीं है। इसका अर्थ उन सामाजिक अनुभवों और सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान से है, जिनके निर्माण में अलग-अलग समुदायों की समान भागीदारी रही है। स्त्रियों की जीवन-कथाएँ इस साझेपन को देखने का विशेष अवसर देती हैं, क्योंकि इनके माध्यम से इतिहास का वह पक्ष सामने आता है जो बड़े राजनीतिक आख्यानो में अक्सर अदृश्य रह जाता है। परिवार, शिक्षा, सामाजिक सुधार, सेवा, संघर्ष और सार्वजनिक जीवन से जुड़े उनके अनुभव तत्कालीन समाज की संरचना और उसमें हो रहे परिवर्तनों को समझने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

इस दृष्टि से 'आर्य महिला रत्न' और 'मुस्लिम महिला रत्न' का एक साथ आना एक सार्थक पहल है। इससे न केवल दुर्लभ सामग्री पाठकों के लिए सुलभ होती है, बल्कि दो समानांतर स्रोतों को एक-दूसरे के संदर्भ में पढ़ने की संभावना भी बनती है।

इस संकलन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह इतिहास को स्त्रियों के अनुभवों के माध्यम से पढ़ने का अवसर देता है। इन जीवनीयों में दर्ज व्यक्तित्वों को केवल 'आदर्श महिलाओं' के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। उनके जीवन के पीछे सक्रिय सामाजिक परिस्थितियों, उपलब्ध अवसरों, सीमाओं और संघर्षों को समझना भी आवश्यक है। इस तरह ये कथाएँ अपने समय की स्त्री-स्थिति के साथ-साथ उस समाज के परिवर्तनशील चरित्र को भी अभिव्यक्त करती हैं।

आज जब इतिहास और संस्कृति को पुनः पढ़ने की आवश्यकता महसूस की जा रही है, तब ऐसी सामग्री का पुनर्संकलन विशेष महत्व रखता है। 'आर्य महिला रत्न' और 'मुस्लिम महिला रत्न' को साथ रखकर पढ़ना अतीत की दो कृतियों को पुनः उपलब्ध कराना भर नहीं है, यह भारतीय समाज की बहुलता के भीतर मौजूद संवाद, समानता और साझा अनुभवों को पहचानने का प्रयास है।

अंततः, यह संकलन हमें यह देखने का अवसर देता है कि भारतीय इतिहास का निर्माण केवल राजनीतिक घटनाओं से नहीं हुआ, बल्कि उन असंख्य स्त्री-जीवनों से भी हुआ है जिन्होंने अपने परिवार, समाज और समय को प्रभावित किया। 'आर्य एवं मुस्लिम महिला रत्न' की सामग्री को एक साथ पढ़ने पर इन जीवन-कथाओं के बीच की समानताएँ-भिन्नताएँ और अंतर्संबंध अधिक स्पष्ट होते हैं। यही दृष्टि उस साझी संस्कृति को समझने की आधारभूमि तैयार करती है, जिसकी उपस्थिति भारतीय समाज के इतिहास में निरंतर रही है।

अनुक्रम

दो शब्द	5
---------	---

आर्य महिला रत्न (खण्ड-क)

1. मीनल देवी	11
2. वीरमती	17
3. विद्युल्लता	28
4. जीजाबाई	38
5. रानी सारन्धा	51
6. महारानी प्रभावती	71
7. हाड़ारानी	79
8. रानी जयमती	89
9. ताईबाई	98
10. रानी साहब कुँवरि	102
11. कृष्णकुमारी	109
12. महारानी ज़िन्दा	116
13. महारानी लक्ष्मीबाई	125

मुस्लिम महिला रत्न (खण्ड-ख)

1. सुलताना रज़िया बेगम	136
2. बीदर की बेगम	141
3. गुलशन	146

10 :: आर्य एवं मुस्लिम महिला रत्न

4.	रूपवती बेगम	158
5.	मल्का चाँद बीबी	163
6.	नूरजहाँ	175
7.	जहानआरा	186
8.	रौशनआरा	192
9.	नज़ीरुन्निसा	195
10.	फूलजानी बेगम	200
11.	ज़ेबुन्निसा बेगम	206
12.	लुत्फुन्निसा बेगम	223

परिशिष्ट

भूमिका-ईश्वरी प्रसाद शर्मा	229
भूमिका-ज़हूर बख़्श	230
कृतज्ञता-प्रकाश-ज़हूर बख़्श	231